1. **दुधारू नस्लें:** जमुनापारी, सूरती, जखराना, बरबरी एवं बीटल नस्लें शामिल हैं।
2. **माँसोत्पादक नस्लें:** ब्लेक बंगाल, उस्मानाबादी, मारवाडी, मेहसाना, संगमनेरी, कच्छी तथा सिरोही नस्लें शामिल हैं।
3. **ऊन उत्पादक नस्लें:** कश्मीरी, चाँगथाँग, गद्दी, चेगू आदि है जिनसे पश्मीना प्राप्त होता है।

बकरियों का खान-पान

यह एक ऐसा जानवर है जो कि अपने खान पान के लिए कम से कम और निम्न गुणवत्ता वाले भोजन से भी अपना निर्वाह कर सकता है। इनको कंटीली झाड़ियां, बबूल, पीपल, नीम और बेर इत्यादि की पत्तियाँ बहुत पसंद होती हैं। अतः इन पत्तियों के लिए इनको बाड़े से बाहर ले जाना परम आवश्यक हो जाता है। लेकिन शरदकाल में दिन छोटा होने के कारण ये पर्याप्त मात्रा में भोजन नहीं ले पाती हैं। अतः प्रति बकरी 2 किलोग्राम हरा चारा रात के लिए देना चाहिए।

कुछ महत्वपूर्ण बातें जिनकी सहायता से इनका खान पान अच्छे से कर सकते हैं –

1. चरागाह न होने की स्थिति में इनको दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) चारा देना चाहिए।
2. एक दुधारू बकरी को कम से कम पूरे दिन में 3.5–5 किलोग्राम हरा चारा और 1 किलोग्राम राशन मिलना चाहिए।
3. 50 किलोग्राम की बकरी को कम से कम 500 ग्राम राशन की जरूरत होती है।
4. दुधारू बकरी को प्रति 3 किलोग्राम दुग्ध उत्पादन के लिए 1 किलोग्राम राशन की जरूरत होती है।
5. 9–12 माह के बच्चों को 250 ग्राम राशन की जरूरत होती है।
6. बकरे और बकरी को सामान्य दिनों में 400 ग्राम और बकरी को प्रसव के दो माह पहले तथा बकरे को प्रजनन काल में 500 ग्राम राशन देना चाहिए।

बीमारियों से रोकथाम

इनको बीमारियों से बचाने के लिए निश्चित समय पर टीकाकरण करना चाहिए। इनकी मुख्य बीमारियाँ तथा उनके रोकथाम के लिए टीकाकरण का सही समय इस प्रकार हैं–

1. **पीपीआर (PPR):** पहली खुराक 4 महीने की उम्र में तथा प्रत्येक 4 वर्ष के अंतराल में बूस्टर खुराक दी जाती है।
2. **ऐन्ट्रोटाक्सीमिया (Enterotoxaemia):** पहली खुराक 3 महीने की उम्र में तथा इसके 15 दिन बाद बूस्टर खुराक दी जाती है।
3. **खुरपका मुँहपका एवं गलाघोंटू (FMD & HS):** पहली खुराक 3 महीने की उम्र में तथा प्रत्येक 6 महीने के अंतराल में बूस्टर खुराक दी जाती है।

शैक्षणिक भवन

प्रशासनिक भवन

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:
निदेशक प्रसार शिक्षा
प्रसार शिक्षा निदेशालय
दूरभाष : 0510-2730808
ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशित:
कुलपति
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2024/94

किसानों की आजीविका का साधन : बकरी पालन

गौरव कुमार
अमित सिंह विशेन
प्रमोद कुमार सोनी
एवं
वी.पी. सिंह

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय

प्रसार शिक्षा निदेशालय
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)
वेबसाईट : www.rlbcau.ac.in

भारत देश एक कृषि प्रदान देश है यहां कृषि के साथ–साथ पशुपालन किसानों का प्रमुख व्यवसाय है जो कि एक दुसरे के पर्याय माने जाते हैं। यह व्यवसाय ग्रामीण और सूखा ग्रस्त इलाकों में किसानों की आय का प्रमुख स्रोत है। इन इलाकों में बकरी पालन सबसे लोकप्रिय व्यवसाय है क्योकि सूखे के दृष्टिकोण से छोटे किसानों के लिये यह बहुत प्रभावी हो सकता है। यदि इन इलाकों में इसको संगठित और व्यवसायिक तरीके से किया जाए तो यह आमदनी और बकरियों की तादात दोनो में बढ़ोत्तरी कर सकता है। हमारे देश की अधिकांश जनसंख्या की आजीविका इस व्यवसाय के इर्द–गिर्द घुमती है। जनसंख्या में वृद्धि और कृषि योग्य भूमि में कमी के कारण भविष्य में छोटे पशुओं का पालन ही किसानों की आय का मुख्य स्रोत होगा तथा इनका रखरखाव और खाने का इन्तजाम भी कम खर्चे पर आसानी से महिलाओं और बच्चों द्वारा किया जा सकता है।

बकरी व्यवहार में एक सीधा–साधा और किसी भी वातावरण परिस्थितियों में आसानी से ढ़लने वाला छोटा पशु है। इसलिये बकरी को गरीब किसानों की गाय भी कहा जाता है। वर्ष 2019 की पशु गणना के अनुसार हमारे देश में बकरियों की कुल सख्या 148.88 मिलियन है जो कि देश के कुल पशुपालन का 27.80 प्रतिशत है तथा कुल दुग्ध उत्पादन में बकरियों के दूध की भागीदारी 3.4 प्रतिशत है।

बकरी पालन व्यवसाय को हम कम से कम जमापूंजी में भी शुरूआत कर सकते है। बकरियों में अधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता और पेडों की पत्तियों को चारे के रूप में उपयोग करना तथा प्रत्येक वातावरण परिस्थितियों में आसानी से ढ़लने के कारण हम इस व्यवसाय से अधिक से अधिक मुनाफा कमा सकते है। यह मुनाफा हम इनके बच्चों और दूध को बेचकर तथा इनके मल को कृषि भूमि में खाद के रूप में उपयोग किया जा सकता है। छोटे स्तर पर इस व्यवसाय की शुरूआत करने के लिए किसी भी विशेष प्रशिक्षण की जरूरत नहीं होती है, यदि हम इसको बड़े पैमाने पर शुरूआत करते हैं तो हमे कुछ प्रशिक्षण लेने कि जरूरत पड़ती है जो कि हमारे देश में कई संस्थानों में उपलब्ध है। इन संस्थानों में प्रवेश लेकर बकरी पालन की उचित जानकारी जैसे कि बकरी की उपयुक्त नस्ल, उसके खान पान और उचित देखभाल करने के बारे में पूर्ण रूप से सिखाया जाता है लेकिन प्रमुख रूप से यह प्रशिक्षण भारत में केंद्रीय बकरी अनुसंधान केंद्र मखदूम, मथुरा (उत्तर प्रदेश) में कराया जाता है। इस प्रशिक्षण से संबंधित जानकारी तथा प्रवेश के लिए आवेदन इनकी वेबसाइट पर जा कर किया जा सकता है।

बकरी पालन के लिए राज्य और केन्द्र सरकार द्वारा समय–समय पर विभिन्न योजनाएं लायी जाती हैं जिससे कि गरीब वर्ग के लोग इस व्यवसाय से अपनी आय को दोगुना कर सकते हैं। इन योजनाओं के तहत किसानों को पशु पालन करने के लिए सब्सिडी तथा न्यूनतम ब्याज–दरों पर कर्ज मुहैया कराया जाता है।

बकरी पालन करने के लिए महत्वपूर्ण तथ्य

पाँच बकरियों की एक छोटी यूनिट लगाने पर 20–25 हजार रूपये तक का खर्च आता है। लेकिन एक वर्ष में इनकी संख्या बढ़कर 10–12 हो जाती है।

बाजार में एक वर्ष की उम्र का बकरा कम से कम 5 हजार रूपये में बिक जाता है। इसके अलावा बकरी के दूध की पाचकता अधिक होने के साथ–साथ डेंगू जैसी बीमारी के दौरान प्लेटलेट्स बढ़ाने में कारगर होने के कारण बाजार में अच्छी कीमत पर बिक जाता है। इन्हीं कारणों से बकरी पालन किसानों के लिए मुनाफे का व्यवसाय है।

इस व्यवसाय से अधिक से अधिक मुनाफा लेने के लिए निम्न आवश्यक बातों को ध्यान में रखना चाहिए:

1. बकरियों के रहने की जगह (बाड़ा) दलदली ना हो क्योकि इनको खुले और साफ–सुथरे स्थान पर रहना पसंद होता है।
2. बकरियों को चारे के रूप में पेड़ों की पत्तियाँ बहुत पसंद होती हैं अतः पत्तियों को चारे के रूप में देना चाहिए।
3. बकरियों को चरना बहुत पसंद होता है इसलिए सामान्यतः इनको 7–8 घंटे खुले चारागाह में छोड़ देना चाहिए।
4. बारिश के दिनों में बकरियों को बारिश के पानी से बचाकर रखना चाहिए क्योकि बारिश के पानी में बकरियों का भीगना नुकसानदायक होता है।
5. सामान्यतः बकरियों में प्रजनन करने का समय सितंबर से मार्च होता है। बकरियां एक वर्ष में 2 बार तक बच्चे दे देती हैं, इनका गर्भ काल 150–156 दिन तक का होता हैं।

बकरियों की सही नस्ल का चुनाव

हमारे देश में बकरियों की कुल 39 प्रमाणित नस्लें पाई जाती हैं लेकिन इन प्रमाणित नस्लों की बकरियों की संख्या से कई गुना अधिक वर्णनातीत (नॉन–डेसक्रिप्ट) बकरियां पाई जाती हैं। इसलिए इस व्यवसाय की शुरूआत करने से पहले सही नस्ल का चुनाव महत्वपूर्ण हो जाता है। सही नस्ल के चुनाव के समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जिस नस्ल का चुनाव कर रहे हैं वो आपके वातावरण की परिस्थितयों में ढलने लायक होना चाहिए क्योकि अधिक से अधिक मुनाफे के लिए बकरियों के अनुकूल वातावरण से ही अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। इन प्रमाणित नस्लों को उत्पादन के आधार पर मुख्यतः तीन भागों में बांटा गया है –